वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» हमारे बाज़ारों में विविधता और वैश्वीकरण की प्रस्तावना

प्रश्न 1 (आसान). आज के बाज़ार में वस्तुओं और सेवाओं के विकल्पों की संख्या में क्या बदलाव आया है?
उत्तर – आज के बाज़ार में वस्तुओं और सेवाओं के विकल्पों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है।

प्रश्न 2 (आसान). ये बदलाव पिछले कितने दशकों में ज़्यादा देखे गए हैं?
उत्तर – ये बदलाव पिछले कुछ दशकों में ज़्यादा देखे गए हैं।

प्रश्न 3 (मध्यम). आपके अनुसार, यह विविधता बाज़ार के ग्राहकों के लिए कैसे फायदेमंद है?
उत्तर – यह विविधता ग्राहकों को अधिक विकल्प देती है, जिससे वे अपनी पसंद और बजट के अनुसार बेहतर उत्पाद चुन सकते हैं।

प्रश्न 4 (कठिन). इस बदलाव का एक मुख्य कारण 'वैश्वीकरण' है। आप वैश्वीकरण शब्द से अभी क्या समझते हैं?
उत्तर – वैश्वीकरण का मतलब है जब देश दुनिया के दूसरे देशों से जुड़ते हैं, जिससे वस्तुओं, सेवाओं और विचारों का आदान-प्रदान आसान हो जाता है।

» बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ (MNCs) और उनका उत्पादन विस्तार

प्रश्न 5 (आसान). बहुराष्ट्रीय कंपनी का एक मुख्य गुण क्या है?
उत्तर – यह एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण रखती है।

प्रश्न 6 (आसान). बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ सस्ते श्रम की तलाश में कहाँ उत्पादन इकाइयाँ लगाती हैं?
उत्तर – विकासशील देशों में, जहाँ मज़दूरी कम होती है।

प्रश्न 7 (मध्यम). बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपनी उत्पादन प्रक्रिया को विभिन्न देशों में क्यों फैलाती हैं?
उत्तर – उत्पादन लागत कम करने और अधिक लाभ कमाने के लिए।

प्रश्न 8 (कठिन). क्या एक बहुराष्ट्रीय कंपनी सिर्फ तैयार माल ही दुनिया भर में बेचती है? समझाइए।
उत्तर – नहीं, वे सिर्फ तैयार माल ही नहीं बेचतीं, बल्कि वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन भी विश्व स्तर पर करती हैं, यानी उत्पादन प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को अलग-अलग देशों में बांट देती हैं।

» विश्व-भर के उत्पादन को एक-दूसरे से जोड़ना

प्रश्न 9 (आसान). विदेशी निवेश किसे कहते हैं?
उत्तर – किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी द्वारा दूसरे देश में परिसंपत्तियों, जैसे भूमि, भवन, मशीनें खरीदने में किया गया व्यय।

प्रश्न 10 (आसान). बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय कंपनियों के साथ मिलकर उत्पादन क्यों करती हैं?
उत्तर – स्थानीय कंपनी को अतिरिक्त निवेश के लिए धन और नई तकनीक मिलती है, और MNC को स्थानीय बाजार तक पहुंच।

प्रश्न 11 (मध्यम). MNCs कैसे विश्व-भर के उत्पादन को एक-दूसरे से जोड़ती हैं? कोई दो तरीके बताओ।
उत्तर – MNCs स्थानीय कंपनियों के साथ संयुक्त उत्पादन करती हैं या फिर छोटी स्थानीय कंपनियों को खरीद लेती हैं। वे छोटे उत्पादकों को अपने ब्रांड के लिए सामान बनाने का ऑर्डर भी देती हैं।

प्रश्न 12 (कठिन). क्या MNCs का स्थानीय कंपनियों को खरीदना हमेशा फायदेमंद होता है? अपने विचार बताओ।
उत्तर – नहीं, हमेशा नहीं। स्थानीय कंपनी को भले ही पैसा और नई तकनीक मिले, लेकिन वह अपनी पहचान और स्वतंत्रता खो देती है। बड़ी MNC के आने से छोटी स्थानीय कंपनियों के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है, जिससे कई बार उन्हें नुकसान भी होता है।

» विदेशी निवेश क्या है?

प्रश्न 13 (आसान). जब एक चीनी कंपनी भारत में अपने खिलौने बेचने के लिए एक नया शोरूम खोलती है, तो क्या यह विदेशी निवेश है?
उत्तर – हाँ, यह विदेशी निवेश है।

प्रश्न 14 (आसान). विदेशी निवेश का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?
उत्तर – लाभ कमाना।

प्रश्न 15 (मध्यम). अगर कोई भारतीय कंपनी जर्मनी में जाकर अपना मसाला बनाने का प्लांट लगाती है, तो इसे आप क्या कहेंगे?
उत्तर – इसे विदेशी निवेश कहेंगे (जर्मनी के लिए)।

प्रश्न 16 (कठिन). विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश में दो मुख्य अंतर बताइए।
उत्तर – विदेशी व्यापार में सामान का लेन-देन होता है, जबकि विदेशी निवेश में संपत्ति खरीदी जाती है। विदेशी व्यापार में तुरंत मुनाफा देखा जाता है, जबकि विदेशी निवेश एक दीर्घकालिक योजना होती है।

» बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उत्पादन पर नियंत्रण के तरीके

प्रश्न 17 (आसान). क्या बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ केवल अपनी फैक्ट्रियाँ लगाकर ही उत्पादन करती हैं?
उत्तर – नहीं, वे स्थानीय कंपनियों को खरीदकर, साझेदारी करके या छोटे उत्पादकों को ऑर्डर देकर भी उत्पादन करती हैं।

प्रश्न 18 (आसान). कौन से उत्पादों में छोटे उत्पादकों को ऑर्डर दिया जाता है?
उत्तर – कपड़े, जूते-चप्पल और खेल का सामान जैसे उद्योगों में।

प्रश्न 19 (मध्यम). बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किन चीजों को निर्धारित करके उत्पादन को नियंत्रित करती हैं?
उत्तर – उत्पाद का मूल्य, गुणवत्ता, आपूर्ति और श्रम की शर्तें।

प्रश्न 20 (कठिन). बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विकासशील देशों में छोटे उत्पादकों को उत्पादन का ऑर्डर क्यों देती हैं?
उत्तर – क्योंकि विकासशील देशों में उत्पादन लागत कम होती है और उन्हें अपने ब्रांड नाम से उत्पादों को बेचने का मौका मिल जाता है, जिससे मुनाफा बढ़ता है।

» विदेश व्यापार और बाज़ारों का एकीकरण

प्रश्न 21 (आसान). अगर भारत से कपड़े अमेरिका भेजे जाते हैं, तो इसे क्या कहेंगे?
उत्तर – विदेश व्यापार (निर्यात)

प्रश्न 22 (आसान). विदेश व्यापार का एक मुख्य फायदा क्या है?
उत्तर – ग्राहकों के लिए विकल्प बढ़ना।

प्रश्न 23 (मध्यम). विदेश व्यापार कैसे दो देशों के बाज़ारों को एक करता है?
उत्तर – यह एक देश से दूसरे देश में वस्तुओं और सेवाओं के आवागमन को संभव बनाता है, जिससे दोनों देशों के उत्पादक एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर पाते हैं और ग्राहक दोनों देशों की चीजें खरीद पाते हैं।

प्रश्न 24 (कठिन). अगर चीन से सस्ते इलेक्ट्रॉनिक्स भारत में आते हैं, तो भारतीय इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग और ग्राहकों पर क्या असर होगा?
उत्तर – भारतीय इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग को कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, हो सकता है कुछ कंपनियाँ बंद भी हो जाएँ। लेकिन ग्राहकों को सस्ते और ज़्यादा विकल्प मिलेंगे, जिससे उनकी जीवनशैली बेहतर होगी।

» वैश्वीकरण की परिभाषा

प्रश्न 25 (आसान). वैश्वीकरण में किन दो चीज़ों का तीव्र एकीकरण होता है?
उत्तर – विभिन्न देशों के बाज़ारों और उत्पादन का।

प्रश्न 26 (आसान). वैश्वीकरण में कौन सी कंपनियाँ केंद्रीय भूमिका निभाती हैं?
उत्तर – बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ (MNCs)।

प्रश्न 27 (मध्यम). अगर कोई भारतीय कंपनी जर्मनी से मशीनें खरीदती है और फिर उन मशीनों से भारत में ही सामान बनाकर अफ्रीका में बेचती है, तो क्या यह वैश्वीकरण का हिस्सा है? क्यों?
उत्तर – हाँ, यह वैश्वीकरण का हिस्सा है। क्योंकि इसमें विभिन्न देशों के बीच व्यापार (जर्मनी से मशीनें खरीदना, अफ्रीका में बेचना) और उत्पादन (भारत में सामान बनाना) का एकीकरण हो रहा है।

प्रश्न 28 (कठिन). वैश्वीकरण सिर्फ़ व्यापार तक सीमित नहीं है, उत्पादन भी इसका हिस्सा है। इस बात को एक उदाहरण से समझाइए।
उत्तर – मान लीजिए, कोई मोबाइल फ़ोन कंपनी चीन में उसके पार्ट्स बनवा रही है, भारत में उसे असेंबल करवा रही है, और अमेरिका व यूरोप के बाज़ारों में उसे बेच रही है। यहाँ सिर्फ़ बना-बनाया सामान बिक नहीं रहा, बल्कि उत्पादन की पूरी प्रक्रिया ही अलग-अलग देशों में बँटी हुई है और आपस में जुड़ी हुई है। यह दिखाता है कि वैश्वीकरण में सिर्फ़ व्यापार ही नहीं, उत्पादन भी अलग-अलग देशों के बीच जुड़ता है।

» वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले कारक: प्रौद्योगिकी

प्रश्न 29 (आसान). वैश्वीकरण को संभव बनाने में परिवहन प्रौद्योगिकी ने कैसे मदद की है?
उत्तर – इसने कम लागत पर लंबी दूरी तक वस्तुओं की तेज़ी से आपूर्ति संभव बनाई है, जैसे कंटेनर और वायु यातायात।

प्रश्न 30 (आसान). सूचना प्रौद्योगिकी के कोई दो उदाहरण बताइए जो वैश्वीकरण में सहायक हैं।
उत्तर – इंटरनेट और मोबाइल फ़ोन। इनके ज़रिये ई-मेल और वॉइस मेल जैसी सुविधाएँ मिली हैं।

प्रश्न 31 (मध्यम). कल्पना कीजिए कि अगर सूचना प्रौद्योगिकी में इतनी उन्नति न हुई होती, तो बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ आज कैसे काम करतीं?
उत्तर – अगर सूचना प्रौद्योगिकी उन्नत न होती, तो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए अलग-अलग देशों में बैठे अपने कर्मचारियों और शाखाओं से समन्वय करना बहुत मुश्किल और धीमा होता। जानकारी का आदान-प्रदान धीमा होता, निर्णय लेने में देरी होती, और काम का प्रबंधन कठिन होता, जिससे वैश्वीकरण का विस्तार बहुत धीमा होता।

प्रश्न 32 (कठिन). वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले कारकों में प्रौद्योगिकी की भूमिका, दूसरे कारकों (जैसे व्यापार बाधाओं में कमी) से ज़्यादा महत्वपूर्ण क्यों मानी जाती है?
उत्तर – प्रौद्योगिकी की भूमिका इसलिए अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि व्यापार बाधाओं में कमी से व्यापार का रास्ता तो खुलता है, लेकिन असली गति और दक्षता प्रौद्योगिकी ही प्रदान करती है। अगर परिवहन और संचार सस्ता व तेज़ न होता, तो बाधाएँ हटने के बावजूद दूरियों और लागत की वजह से वैश्विक व्यापार इतना नहीं बढ़ पाता। प्रौद्योगिकी ने भौतिक और सूचनात्मक दोनों दूरियों को कम करके वैश्विक जुड़ाव को व्यावहारिक बनाया है।

» वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले कारक: विदेशी व्यापार और निवेश नीति का उदारीकरण

प्रश्न 33 (आसान). अगर सरकार किसी विदेशी सामान पर 'आयात शुल्क' (Import Duty) बढ़ा दे, तो क्या यह 'व्यापार अवरोधक' कहलाएगा?
उत्तर – हाँ, बिल्कुल।

प्रश्न 34 (आसान). सरकार द्वारा व्यापार अवरोधकों को हटाने की प्रक्रिया को क्या कहते हैं?
उत्तर – उदारीकरण।

प्रश्न 35 (मध्यम). उदारीकरण से पहले भारत सरकार विदेशी व्यापार पर प्रतिबंध क्यों लगाती थी?
उत्तर – अपने देश के छोटे उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए।

प्रश्न 36 (कठिन). उदारीकरण से भारतीय उपभोक्ताओं को क्या फायदे हुए?
उत्तर – उन्हें अधिक विकल्प मिले और वस्तुएं सस्ती व अच्छी गुणवत्ता वाली मिलने लगीं।

» विश्व व्यापार संगठन (WTO)

प्रश्न 37 (आसान). WTO का पूरा नाम क्या है?
उत्तर – विश्व व्यापार संगठन (World Trade Organization)

प्रश्न 38 (आसान). WTO का मुख्य लक्ष्य क्या है?
उत्तर – अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को उदार बनाना

प्रश्न 39 (मध्यम). WTO की पहल किन देशों ने की थी?
उत्तर – विकसित देशों ने

प्रश्न 40 (कठिन). विकासशील देश अक्सर WTO के सामने विकसित देशों के किस व्यवहार पर सवाल उठाते हैं?
उत्तर – विकसित देशों द्वारा अपने किसानों को दी जाने वाली भारी सब्सिडी पर, जो निष्पक्ष व्यापार को बाधित करती है।

» भारत में वैश्वीकरण का प्रभाव

प्रश्न 41 (आसान). वैश्वीकरण से उपभोक्ताओं को क्या लाभ हुआ है?
उत्तर – अधिक विकल्प, बेहतर गुणवत्ता और कम कीमत।

प्रश्न 42 (आसान). क्या वैश्वीकरण ने भारत में नए रोज़गार के अवसर पैदा किए हैं?
उत्तर – हाँ, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के निवेश और भारतीय कंपनियों के विस्तार से नए रोज़गार बने हैं।

प्रश्न 43 (मध्यम). किन्हीं दो भारतीय कंपनियों के नाम बताइए जो वैश्वीकरण के कारण बहुराष्ट्रीय कंपनी बन गई हैं।
उत्तर – टाटा मोटर्स, इन्फोसिस, रैनबैक्सी (कोई भी दो)

प्रश्न 44 (कठिन). सरकारें अधिक विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए क्या कदम उठा रही हैं? एक उदाहरण दीजिए।
उत्तर – सरकारें विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) स्थापित कर रही हैं, जहाँ कंपनियों को विश्व स्तरीय सुविधाएँ और टैक्स में छूट दी जाती है। जैसे, शुरू के पाँच सालों तक कोई कर नहीं देना पड़ता।

» छोटे उत्पादकों पर वैश्वीकरण का प्रभाव

प्रश्न 45 (आसान). वैश्वीकरण ने छोटे उत्पादकों के लिए कौन सी बड़ी चुनौती खड़ी की है?
उत्तर – बढ़ती प्रतिस्पर्धा (competition)

प्रश्न 46 (आसान). प्रतिस्पर्धा के कारण कई छोटे विनिर्माता इकाइयों का क्या हुआ?
उत्तर – वे बंद हो गईं।

प्रश्न 47 (मध्यम). छोटे उत्पादकों के बंद होने से श्रमिकों पर क्या असर पड़ता है?
उत्तर – वे बेरोज़गार हो जाते हैं।

प्रश्न 48 (कठिन). अगर सरकार आयात पर से प्रतिबंध हटा दे, तो रवि जैसे छोटे उत्पादकों को क्या करना चाहिए ताकि वे बाज़ार में टिक सकें?
उत्तर – उन्हें अपनी गुणवत्ता सुधारनी चाहिए, लागत कम करने के तरीके खोजने चाहिए, और सरकार से मदद मांगनी चाहिए जैसे बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर और आसान ऋण।

» श्रमिकों पर वैश्वीकरण का प्रभाव: प्रतिस्पर्धा और अनिश्चित रोजगार

प्रश्न 49 (आसान). वैश्वीकरण ने श्रमिकों के रोज़गार को 'अनिश्चित' कैसे बनाया है?
उत्तर – कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ने से वे स्थायी श्रमिकों की जगह अस्थायी या ठेके पर मज़दूर रखने लगी हैं।

प्रश्न 50 (आसान). कंपनियाँ श्रमिकों की मज़दूरी कम क्यों करना चाहती हैं?
उत्तर – लागत कम करने और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए।

प्रश्न 51 (मध्यम). अस्थायी रोज़गार से श्रमिकों को क्या नुकसान होते हैं?
उत्तर – उन्हें कम वेतन मिलता है, स्वास्थ्य बीमा या भविष्य निधि जैसे लाभ नहीं मिलते, और कभी भी नौकरी छूटने का डर रहता है।

प्रश्न 52 (कठिन). क्या वैश्वीकरण का प्रभाव सभी श्रमिकों पर एक जैसा पड़ा है? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर – नहीं, वैश्वीकरण का प्रभाव सभी श्रमिकों पर एक जैसा नहीं पड़ा। कुशल और शिक्षित श्रमिकों को नए अवसर मिले हैं, जबकि कम कुशल और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को अनिश्चितता, कम मज़दूरी और खराब कार्य-परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। जैसे, सॉफ्टवेयर इंजीनियर को अच्छा अवसर मिला, पर कपड़ा मज़दूर को नुकसान हुआ।

» न्यायसंगत वैश्वीकरण के लिए संघर्ष

प्रश्न 53 (आसान). न्यायसंगत वैश्वीकरण का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – सभी के लिए समान अवसर और वैश्वीकरण के लाभों में बेहतर हिस्सेदारी सुनिश्चित करना।

प्रश्न 54 (आसान). वैश्वीकरण से सबसे ज़्यादा फायदा किन्हें हुआ है?
उत्तर – धनी उपभोक्ता और कुशल, शिक्षित एवं धनी उत्पादकों को।

प्रश्न 55 (मध्यम). जनता की क्या भूमिका हो सकती है न्यायसंगत वैश्वीकरण के लिए संघर्ष में?
उत्तर – जनता अपनी आवाज़ उठा सकती है, प्रदर्शन कर सकती है, और सरकार पर ऐसी नीतियाँ बनाने का दबाव डाल सकती है जो सभी के अधिकारों की रक्षा करें।

प्रश्न 56 (कठिन). क्या न्यायसंगत वैश्वीकरण का मतलब वैश्वीकरण को पूरी तरह से बंद करना है? अपने जवाब का कारण बताओ।
उत्तर – नहीं, न्यायसंगत वैश्वीकरण का मतलब वैश्वीकरण को बंद करना नहीं है। इसका मतलब है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया में सुधार लाना ताकि इसके लाभ केवल कुछ ही लोगों तक सीमित न रहें, बल्कि समाज के सभी वर्गों को मिलें और इसके नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए आप अपने लिए एक नया टूथपेस्ट खरीदना चाहते हैं। आज आपको बाजार में कौन-कौन से विकल्प उपलब्ध होंगे?

› पहला, आप देखेंगे कि टूथपेस्ट के कितने ब्रांड्स हैं - जैसे कोलगेट, पतंजलि, पेप्सोडेंट, डाबर, हिमालय आदि।

› दूसरा, हर ब्रांड में अलग-अलग वैरायटी होंगी - जैसे 'ताज़ी साँसों के लिए', 'दांतों की सेंसिटिविटी के लिए', 'आयुर्वेदिक', 'सफ़ेदी के लिए'।

› तीसरा, आपको अलग-अलग पैक साइज़ भी मिलेंगे - छोटा, बड़ा, फैमिली पैक।

› चौथा, कीमतें भी अलग-अलग होंगी, जिससे आप अपने बजट के हिसाब से चुन सकें।

उत्तर – आज बाज़ार में टूथपेस्ट के ढेरों ब्रांड्स, अलग-अलग खूबियों और पैक साइज़ के साथ उपलब्ध हैं, जो हमें चुनने की बहुत बड़ी आज़ादी देते हैं।

उदाहरण 2. एक अमेरिकी कंपनी 'ग्लोबल कार्स' अपनी नई छोटी कार 'सिटी राइड' बनाना चाहती है। बताइए, वह किन देशों में क्या-क्या काम करवा सकती है ताकि उसकी लागत कम हो और मुनाफा बढ़े?

› स्टेप 1: डिज़ाइन और रिसर्च - 'ग्लोबल कार्स' अपनी नई कार का डिज़ाइन और तकनीकी रिसर्च अमेरिका में करवा सकती है, जहाँ उच्च कुशल इंजीनियर और डिज़ाइनर उपलब्ध हैं।

› स्टेप 2: पुर्ज़ों का निर्माण - कार के इंजन, चेसिस और इलेक्ट्रॉनिक पुर्ज़े चीन जैसे देशों में बनवा सकती है, जहाँ कच्चा माल और कुशल श्रमिक सस्ते मिल जाते हैं।

› स्टेप 3: असेंबलिंग - इन पुर्ज़ों को मेक्सिको या पूर्वी यूरोप के देशों में भेज सकती है, क्योंकि ये देश अमेरिकी और यूरोपीय बाज़ारों के करीब हैं और यहाँ भी मज़दूरों की लागत भारत जितनी तो नहीं पर अमेरिका से कम है।

› स्टेप 4: ग्राहक सेवा - कार बेचने के बाद, ग्राहक सेवा के लिए भारत में कॉल सेंटर स्थापित कर सकती है, जहाँ अंग्रेजी बोलने वाले शिक्षित युवा कम लागत पर मिल जाते हैं और अच्छी सेवा दे सकते हैं।

उत्तर – इस तरह 'ग्लोबल कार्स' अपनी उत्पादन प्रक्रिया को विभिन्न देशों में फैलाकर अपनी 'सिटी राइड' कार की लागत को बहुत कम कर सकती है और अपना मुनाफा बढ़ा सकती है।

उदाहरण 3. कारगिल फूड्स ने भारत में 'परख फूड्स' को क्यों खरीदा? इससे कारगिल फूड्स को क्या फायदा हुआ और भारतीय बाजार पर इसका क्या असर पड़ा?

› पहला कदम है समझना कि कारगिल फूड्स एक बहुत बड़ी अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी है, और परख फूड्स एक छोटी भारतीय कंपनी थी जो खाद्य तेल बनाती थी।

› कारगिल फूड्स ने परख फूड्स को इसलिए खरीदा क्योंकि परख फूड्स के पास भारत में पहले से ही एक बहुत बड़ा 'विपणन तंत्र' (marketing network) था, मतलब उसके उत्पाद पूरे भारत में बिकते थे और उसके ब्रांड मशहूर थे। साथ ही, परख फूड्स के पास चार तेल शोधक केंद्र (oil refineries) भी थे।

› अब, कारगिल फूड्स को भारत में अपना नया 'विपणन तंत्र' बनाने या नए कारखाने लगाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। उसे सीधा-सीधा बना-बनाया बाज़ार और उत्पादन क्षमता मिल गई।

› परिणामस्वरूप, कारगिल फूड्स रातों-रात भारत में खाद्य तेल की सबसे बड़ी उत्पादक कंपनी बन गई, जिसकी प्रतिदिन 50 लाख पैकेट बनाने की क्षमता थी।

› भारतीय बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ी और ग्राहकों को शायद नए और सस्ते विकल्प भी मिले, लेकिन परख फूड्स जैसी स्थानीय कंपनी का अस्तित्व एक बड़ी MNC में बदल गया।

उत्तर – कारगिल फूड्स ने परख फूड्स को उसके बने-बनाए विपणन तंत्र और तेल शोधक केंद्रों का लाभ उठाने के लिए खरीदा, जिससे वह तुरंत भारत में खाद्य तेल की सबसे बड़ी उत्पादक बन गई। इसका असर यह हुआ कि भारतीय बाजार में एक बड़ी विदेशी कंपनी का प्रभुत्व बढ़ गया।

उदाहरण 4. एक अमेरिकी कंपनी ने भारत में एक कार बनाने का प्लांट लगाया। इस प्लांट में उसने ₹2000 करोड़ का निवेश किया, जिसमें ज़मीन, मशीनें और इमारतों का ख़र्च शामिल है। यह किस प्रकार का निवेश है और क्यों?

› पहला चरण: पहचानो कि कंपनी कहाँ की है और निवेश कहाँ कर रही है। यहाँ अमेरिकी कंपनी भारत में निवेश कर रही है।

› दूसरा चरण: पहचानो कि कंपनी क्या कर रही है। वह कार बनाने का प्लांट लगा रही है और ज़मीन, मशीनें, इमारतें खरीद रही है।

› तीसरा चरण: समझो कि यह निवेश क्यों किया जा रहा है। कंपनी भारत में उत्पादन करके लाभ कमाना चाहती है।

› निष्कर्ष: चूँकि एक विदेशी (अमेरिकी) कंपनी दूसरे देश (भारत) में संपत्ति (प्लांट, मशीनें, ज़मीन) खरीदकर लाभ कमाने के उद्देश्य से पैसा लगा रही है, यह विदेशी निवेश है।

उत्तर – यह विदेशी निवेश है, क्योंकि एक बहुराष्ट्रीय अमेरिकी कंपनी ने भारत में लाभ कमाने के उद्देश्य से उत्पादन परिसंपत्तियों में पैसा लगाया है।

उदाहरण 5. मान लीजिए एक बहुराष्ट्रीय कंपनी 'फैशन स्टार' दुनिया भर में कपड़े बेचती है। वह भारत में अपना उत्पादन कैसे नियंत्रित कर सकती है?

› पहला तरीका: फैशन स्टार भारत की किसी छोटी, अच्छी कपड़े बनाने वाली कंपनी को खरीद सकती है। अब वह भारतीय कंपनी फैशन स्टार के लिए ही कपड़े बनाएगी।

› दूसरा तरीका: फैशन स्टार किसी भारतीय कपड़ा कंपनी के साथ मिलकर काम कर सकती है (साझेदारी)। वे दोनों मिलकर फैशन स्टार के ब्रांड के कपड़े बना सकते हैं।

› तीसरा तरीका: फैशन स्टार दिल्ली, मुंबई या लुधियाना के छोटे-छोटे कपड़ा उत्पादकों को बड़े पैमाने पर अपने ब्रांड के कपड़े बनाने का ऑर्डर दे सकती है।

› चौथा तरीका: जब वह ऑर्डर देगी, तो 'फैशन स्टार' ही बताएगी कि कपड़े का डिज़ाइन क्या होगा, कपड़े की क्वालिटी कैसी होगी, कितने दिन में सप्लाई चाहिए और मज़दूरों को कितनी मज़दूरी मिलेगी। इस तरह, वह पूरे उत्पादन पर नियंत्रण रखती है।

उत्तर – इस तरह 'फैशन स्टार' जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय कंपनियों को खरीदकर, साझेदारी करके या छोटे उत्पादकों को ऑर्डर देकर भारत में कपड़े के उत्पादन को कई तरह से नियंत्रित करती हैं।

उदाहरण 6. भारत में चीनी खिलौने आने से बाज़ार और ग्राहकों पर क्या असर पड़ता है? समझाओ।

› स्टेप 1: सबसे पहले, ग्राहकों के पास 'विकल्प' बढ़ जाते हैं। पहले सिर्फ़ भारतीय खिलौने थे, अब चीनी भी हैं।

› स्टेप 2: अक्सर चीनी खिलौने सस्ते और नए डिज़ाइन के होते हैं, जिससे भारतीय खिलौनों से उनकी 'प्रतिस्पर्धा' बढ़ती है।

› स्टेप 3: इस प्रतिस्पर्धा के कारण, भारतीय खिलौना बनाने वालों को मुश्किल होती है क्योंकि उनके खिलौने कम बिकते हैं।

› स्टेप 4: कुल मिलाकर, दोनों देशों के बाज़ार आपस में जुड़ जाते हैं, जहाँ चीन को अपना माल बेचने का अवसर मिलता है और भारतीय ग्राहकों को सस्ते और ज़्यादा विकल्प मिलते हैं।

उत्तर – चीनी खिलौनों के भारत आने से ग्राहकों के विकल्प बढ़ जाते हैं, कीमतों में प्रतिस्पर्धा बढ़ती है, जिससे भारतीय उत्पादकों को चुनौती मिलती है और इस तरह भारत और चीन के बाज़ारों का एकीकरण होता है।

उदाहरण 7. मान लीजिए एक भारतीय कंपनी अपने कपड़े अमेरिका में बेच रही है और उसी भारतीय कंपनी ने वियतनाम में कपड़े बनाने की फ़ैक्ट्री लगाई है। यह किस प्रक्रिया का उदाहरण है?

› पहला कदम: यहाँ एक भारतीय कंपनी अपना सामान (कपड़े) दूसरे देश (अमेरिका) में बेच रही है। इसका मतलब, भारत का बाज़ार और अमेरिका का बाज़ार जुड़ रहा है।

› दूसरा कदम: वही भारतीय कंपनी एक तीसरे देश (वियतनाम) में अपनी उत्पादन इकाई (फ़ैक्ट्री) लगा रही है। इसका मतलब, उत्पादन भी देशों के बीच बंट रहा है और जुड़ रहा है।

› तीसरा कदम: जब सामान का लेन-देन और उत्पादन दोनों ही अलग-अलग देशों के बीच बहुत तेज़ी से जुड़ते हैं, और इसमें एक कंपनी (जो कई देशों में काम कर रही है) मुख्य भूमिका निभाती है, तो इसे वैश्वीकरण कहते हैं।

उत्तर – यह वैश्वीकरण की प्रक्रिया का एक स्पष्ट उदाहरण है।

उदाहरण 8. वैश्वीकरण में प्रौद्योगिकी की भूमिका को एक उदाहरण से समझाइए।

› पहला कदम: सबसे पहले, यह सोचिए कि प्रौद्योगिकी के बिना क्या वैश्वीकरण संभव था? नहीं।

› दूसरा कदम: अब हम देखते हैं परिवहन प्रौद्योगिकी। सोचिए कि चीन से खिलौने आते हैं, तो ये कंटेनरों में भरकर जहाजों से आते हैं। कंटेनर से सामान सुरक्षित रहता है, जल्दी पहुँचता है और किराया भी कम लगता है। पहले ये सब बहुत मुश्किल और महंगा था।

› तीसरा कदम: फिर आती है सूचना और संचार प्रौद्योगिकी। मान लीजिए, लंदन की एक मैगज़ीन की डिज़ाइनिंग दिल्ली में होती है। तो लंदन से सारी जानकारी इंटरनेट पर ई-मेल से दिल्ली आती है। दिल्ली के डिज़ाइनर कंप्यूटर पर काम करते हैं, लंदन में फ़ोन या वीडियो कॉल करके सलाह लेते हैं। पेमेंट भी इंटरनेट बैंकिंग से तुरंत हो जाती है।

› चौथा कदम: ये सब तेज़ और सस्ता संचार, और तेज़ व सुरक्षित परिवहन, ये दोनों ही तो प्रौद्योगिकी की देन हैं, जिन्होंने देशों को इतना पास ला दिया है।

› पांचवा कदम: तो इस तरह, इन दोनों प्रौद्योगिकियों ने मिलकर वस्तुओं, सेवाओं और सूचनाओं का आदान-प्रदान बहुत

आसान और तेज़ बना दिया, जिससे वैश्वीकरण संभव हो पाया।

उत्तर – प्रौद्योगिकी, विशेषकर परिवहन और सूचना प्रौद्योगिकी, ने वस्तुओं और सेवाओं के वैश्विक आदान-प्रदान को तेज़, सुरक्षित और सस्ता बनाकर वैश्वीकरण को संभव बनाया है। उदाहरण के लिए, कंटेनर जहाजों से सामान का सस्ता परिवहन और इंटरनेट व मोबाइल फ़ोन से तुरंत वैश्विक संचार, ये सभी वैश्वीकरण के मुख्य आधार हैं।

उदाहरण 9. मान लीजिए, भारत सरकार ने 1991 से पहले चीन से आने वाले कपड़ों पर 50% आयात शुल्क (टैक्स) लगा रखा था। इससे वैश्वीकरण कैसे प्रभावित होता था और 'उदारीकरण' के बाद क्या बदलाव आया?

› पहला, जब चीन के कपड़ों पर 50% टैक्स लगता था, तो वो कपड़े भारत में बहुत महंगे हो जाते थे।

› दूसरा, इससे भारतीय कंपनियों को चीन के सस्ते कपड़ों से मुकाबला नहीं करना पड़ता था, वो आराम से अपने कपड़े बेच पाती थीं।

› तीसरा, भारतीय उपभोक्ता के पास विदेशी कपड़ों का विकल्प बहुत कम था, और जो था वो महंगा था।

› अब, जब 1991 में सरकार ने इस टैक्स को हटा दिया या बहुत कम कर दिया, यानी 'उदारीकरण' किया,

› तो चीन के कपड़े भारत में सस्ते हो गए, जिससे भारतीय और विदेशी दोनों तरह के कपड़ों की प्रतिस्पर्धा बढ़ी।

› इससे उपभोक्ताओं को सस्ते और अच्छे विकल्प मिले, और भारत में विदेशी कपड़ों का आयात बढ़ गया, जो वैश्वीकरण का एक बड़ा हिस्सा है।

उत्तर – टैक्स के कारण चीन के कपड़े महंगे होकर आयात कम होता था, जो वैश्वीकरण में बाधा थी। उदारीकरण (टैक्स हटाना) के बाद आयात बढ़ा और उपभोक्ता को अधिक विकल्प मिले, जिससे वैश्वीकरण को बढ़ावा मिला।

उदाहरण 10. अगर एक विकासशील देश अपने घरेलू उद्योगों को बचाने के लिए आयात पर भारी टैक्स लगाता है, तो WTO इस पर कैसे प्रतिक्रिया दे सकता है?

› पहला, WTO के नियमों के अनुसार, देश को अपने व्यापार अवरोधकों को कम करना होता है ताकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार उदार हो सके।

› दूसरा, यदि कोई देश अनावश्यक रूप से ऊँचे टैक्स लगाता है, तो WTO उस देश से इन नियमों का पालन करने का आग्रह कर सकता है।

› तीसरा, अगर बात नहीं बनती, तो विवाद समाधान प्रणाली के तहत अन्य देश इस मुद्दे को WTO में उठा सकते हैं।

› आखिर में, WTO व्यापार को निष्पक्ष और बिना भेदभाव के बनाने के लिए बातचीत और मध्यस्थता के माध्यम से समाधान खोजने में मदद करता है।

उत्तर – WTO व्यापार बाधाओं को कम करने और निष्पक्ष व्यापार सुनिश्चित करने के लिए उस देश पर नियमों का पालन करने का दबाव डालेगा, और जरूरत पड़ने पर विवादों को सुलझाने में मध्यस्थता करेगा।

उदाहरण 11. भारत में वैश्वीकरण के किन्हीं तीन सकारात्मक प्रभावों की चर्चा करें।

› पहला प्रभाव: उपभोक्ताओं को अधिक विकल्प और बेहतर उत्पाद मिलते हैं। जैसे, आज हम अपनी पसंद का कोई भी गैजेट या कपड़े खरीद सकते हैं, क्योंकि बाज़ार में विदेशी और भारतीय दोनों तरह के ढेरों विकल्प मौजूद हैं। प्रतिस्पर्धा के कारण दाम भी कम होते हैं और गुणवत्ता भी सुधरती है।

› दूसरा प्रभाव: नए रोज़गार के अवसर पैदा हुए हैं। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत में आती हैं, तो वे अपनी फैक्ट्रियाँ लगाती हैं, ऑफिस खोलती हैं, जिससे लोगों को नौकरियां मिलती हैं। साथ ही, भारतीय कंपनियाँ भी बढ़ती हैं और नए लोगों को काम पर रखती हैं।

› तीसरा प्रभाव: कुछ भारतीय कंपनियाँ वैश्विक स्तर पर उभर रही हैं। टाटा मोटर्स, इन्फोसिस जैसी हमारी अपनी कंपनियाँ अब सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों में अपना व्यापार कर रही हैं। यह वैश्वीकरण से ही संभव हुआ है कि उन्हें वैश्विक बाज़ार में अपनी जगह बनाने का मौका मिला।

उत्तर – भारत में वैश्वीकरण के तीन मुख्य सकारात्मक प्रभाव हैं: उपभोक्ताओं को अधिक विकल्प और बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पाद, नए रोज़गार के अवसरों का सृजन, और कुछ भारतीय कंपनियों का बहुराष्ट्रीय कंपनियों के रूप में उभरना।

उदाहरण 12. रवि ने 1992 में तमिलनाडु में संधारित्र (capacitors) बनाने की एक छोटी इकाई शुरू की। उसमें 20 श्रमिक काम करते थे। 2001 में सरकार ने संधारित्र के आयात पर से प्रतिबंध हटा दिए। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने सस्ते संधारित्र आयात करना शुरू कर दिया। रवि की इकाई पर इसका क्या प्रभाव पड़ा?

› पहला कदम: रवि की कंपनी पहले स्थानीय स्तर पर संधारित्र बनाकर भारतीय टेलीविजन कंपनियों को बेचती थी, जिससे उसका अच्छा काम चल रहा था।

› दूसरा कदम: 2001 में आयात पर प्रतिबंध हटने के बाद, बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने विदेशी, सस्ते संधारित्र लाना शुरू कर दिया।

› तीसरा कदम: भारतीय टेलीविजन कंपनियों ने रवि से संधारित्र खरीदना बंद कर दिया, क्योंकि आयातित माल आधा सस्ता था।

› चौथा कदम: रवि का उत्पादन कम हो गया। 20 श्रमिकों में से अब सिर्फ 7 ही काम कर रहे हैं। उसके कई दोस्तों ने भी अपनी इकाइयाँ बंद कर दीं।

› निष्कर्ष: वैश्वीकरण और मुक्त आयात नीति के कारण रवि जैसे छोटे उत्पादक कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं कर पाए और उनका व्यवसाय बुरी तरह प्रभावित हुआ।

उत्तर – वैश्वीकरण और सस्ते आयात के कारण रवि की इकाई का उत्पादन आधे से भी कम हो गया, और उसके ज़्यादातर श्रमिक बेरोज़गार हो गए। रवि को अपनी कंपनी चलाने में भारी संकट का सामना करना पड़ा।

उदाहरण 13. मान लीजिए एक भारतीय खिलौना बनाने वाली कंपनी है, जिसे एक बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनी से बहुत बड़ा ऑर्डर मिला है। लेकिन बहुराष्ट्रीय कंपनी चाहती है कि खिलौने बहुत सस्ते में मिलें। तो, भारतीय कंपनी अपने उत्पादन लागत को कैसे कम कर सकती है, और इसका श्रमिकों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

› पहला कदम: भारतीय कंपनी को अपनी उत्पादन लागत कम करने के तरीके खोजने होंगे ताकि वह ऑर्डर ले सके।

› दूसरा कदम: कच्चे माल की लागत में ज़्यादा कटौती संभव नहीं होती, क्योंकि उसकी गुणवत्ता से समझौता नहीं किया जा सकता।

› तीसरा कदम: इसलिए, कंपनी श्रम-लागत में कटौती करने की कोशिश करेगी।

› चौथा कदम: यह अक्सर श्रमिकों को अस्थायी आधार पर नियुक्त करके या उनके वेतन और अन्य लाभों (जैसे स्वास्थ्य बीमा, भविष्य निधि) में कटौती करके किया जाता है।

› पांचवां कदम: श्रमिकों को लंबे समय तक काम करना पड़ सकता है, यहाँ तक कि रात में भी, और उन्हें कम मज़दूरी मिल सकती है। उनका रोज़गार असुरक्षित हो जाता है।

उत्तर – भारतीय कंपनी श्रम-लागत में कटौती करके उत्पादन लागत कम करेगी, जिसका परिणाम श्रमिकों के लिए अस्थायी रोज़गार, कम वेतन, लंबे कार्य-घंटे और सुरक्षा व लाभों में कमी होगी।

उदाहरण 14. सरकार कैसे वैश्वीकरण को न्यायसंगत बना सकती है? कोई दो उपाय बताओ।

› पहला उपाय: सरकार को श्रम कानूनों को मज़बूत करना चाहिए। ताकि कंपनियों को श्रमिकों को उचित वेतन देना पड़े और उन्हें स्थायी नौकरी मिले। उनके अधिकार सुरक्षित रहें।

› दूसरा उपाय: सरकार को छोटे उत्पादकों की मदद करनी चाहिए। उन्हें सस्ते लोन, अच्छी तकनीक और बाज़ार तक पहुँचने में मदद देनी चाहिए, ताकि वे बड़ी कंपनियों से मुकाबला कर सकें।

उत्तर – इस तरह, श्रम कानूनों को मज़बूत करके और छोटे उत्पादकों को सहायता देकर सरकार वैश्वीकरण को अधिक न्यायसंगत बना सकती है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह अवधारणा वैश्वीकरण से संबंधित है, जो इस अध्याय का मुख्य विषय है। इसे अच्छे से समझना ज़रूरी है क्योंकि आगे के सभी कांसेप्ट इसी पर आधारित होंगे।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उत्पादन के लिए कहाँ और क्यों इकाइयाँ स्थापित करती हैं। कारणों को अच्छे से याद रखना।

• यह प्रश्न 'वैश्वीकरण' अध्याय में बहुत महत्वपूर्ण है। बोर्ड परीक्षा में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उत्पादन को जोड़ने के विभिन्न तरीकों और उनके प्रभावों पर अक्सर सवाल आते हैं। उदाहरणों के साथ समझाओगे तो पूरे नंबर मिलेंगे।

• यह 'वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था' अध्याय का एक बहुत महत्वपूर्ण आधार है, इसलिए इसकी परिभाषा और उद्देश्य अच्छी तरह से समझना बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है।

• यह प्रश्न अक्सर 3 या 5 नंबर में आता है। सभी मुख्य बिंदुओं को विस्तार से समझाना बहुत ज़रूरी है।

• यह अवधारणा 'वैश्वीकरण' को समझने की नींव है, इसलिए बोर्ड परीक्षाओं में इसके सीधे प्रश्न या वैश्वीकरण से जुड़े बड़े प्रश्नों में इसकी भूमिका को समझाने वाले सवाल ज़रूर आते हैं। इसे अच्छे से समझ लेना।

• वैश्वीकरण की परिभाषा और इसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका को उदाहरणों के साथ याद रखना, यह बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें परिवहन और सूचना प्रौद्योगिकी दोनों की भूमिका को उदाहरणों के साथ स्पष्ट करना ज़रूरी है। 'कंटेनर' और 'इंटरनेट' जैसे शब्द अपनी उत्तर पुस्तिका में ज़रूर लिखें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'उदारीकरण' की परिभाषा और उसके प्रभावों पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं, इसे अच्छे से समझना।

• विश्व व्यापार संगठन (WTO) और 'उदारीकरण' के बीच का संबंध बहुत महत्वपूर्ण है। बोर्ड परीक्षा में इनके आपसी जुड़ाव और विकासशील देशों पर इसके प्रभाव से जुड़े प्रश्न अक्सर आते हैं।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। प्रभावों को हमेशा सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं में बांटकर लिखें, उदाहरणों के साथ समझाएँ।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि वैश्वीकरण का छोटे उत्पादकों पर क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ा। इसे उदाहरण सहित तैयार करें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों' पर अक्सर सीधे प्रश्न आते हैं, जहाँ आपको श्रमिकों पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को ज़रूर शामिल करना है। सुशीला जैसे उदाहरण देकर अपनी बात को स्पष्ट करें।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं कि न्यायसंगत वैश्वीकरण क्यों ज़रूरी है और इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है।

एक नज़र में रिवीज़न

› भारतीय बाज़ारों में विविधता वैश्वीकरण के कारण बढ़ी नवीन परिघटना।

› MNCs: एक से अधिक देशों में उत्पादन; लागत घटाना, मुनाफा बढ़ाना।

› MNCs संयुक्त उत्पादन, कंपनियों को खरीदकर, ऑर्डर देकर, और विदेशी निवेश से उत्पादन जोड़ती हैं।

› बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा लाभ हेतु दूसरे देश में संपत्ति खरीदना।

› MNCs स्थानीय कंपनियों को खरीदकर/साझेदारी से/ऑर्डर देकर उत्पादन नियंत्रित करती हैं।

› विदेश व्यापार: विकल्पों में वृद्धि, बाज़ारों का एकीकरण, प्रतिस्पर्धा।

› वैश्वीकरण: देशों के बाज़ार-उत्पादन का तीव्र एकीकरण, MNCs केंद्रीय।

› प्रौद्योगिकी (परिवहन, सूचना) ने वैश्वीकरण को तेज़, सस्ता व संभव बनाया।

› उदारीकरण = व्यापार अवरोधकों को हटाना; वैश्वीकरण का महत्वपूर्ण कारक।

› WTO: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को उदार बनाने, नियम बनाने वाला संगठन।

› वैश्वीकरण: अधिक विकल्प, नए रोजगार, भारतीय MNCs, कुछ चुनौतियाँ।

› वैश्वीकरण से छोटे उत्पादक प्रतिस्पर्धा में हारे, इकाइयाँ बंद हुईं, श्रमिक बेरोज़गार हुए।

› वैश्वीकरण से प्रतिस्पर्धा बढ़ी, श्रमिकों का रोज़गार अनिश्चित हुआ, लाभ घटे।

› न्यायसंगत वैश्वीकरण: सभी के लिए लाभ और समान अवसर।